International Journal of Information Movement Vol.5 Issue V (September 2020)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 33-37

'महिला लेखिकाओं का हिन्दी के प्रति योगदान'

डॉ. ऋषिपाल
अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी–विभाग, बाबू अनन्त राम
जनता कॉलेज, कौल, कैथल
Email: rishipalsuman@gmail.com

नारी सृष्टि का प्रमुख उद्‌गम स्रोत है। नारी के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। बिना नारी के मानव अधूरा है। मानव समाज रूपी रथ पुरुष और स्त्री, इन दो पहियों पर चलता हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय लोक जीवन में नर और नारी दोनों को समान महत्त्व दिया गया है। नारी इस सृष्टि की सबसे अमूल्य रचना है। वह इस मानव सृष्टि की जन्मदात्री है। नारी हृदय प्रधान व प्रेम की निश्छल मूर्ति है। वह सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला की प्रेरक शक्ति और प्रेम व ममता का अक्षय भण्डार मानी गयी है। नारी न केवल आदिम–संस्कृति का उद्‌गम स्थल है, अपितु सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका और गृहस्थ स्नेह–सुख की सरिता का स्रोत भी है। उसका जीवन कला, संगीत और साहित्य से ओत–प्रोत है। उसके रोम–रोम में कला, साहित्य और संगीत रचा–बसा है। माता, पत्नी, प्रेयसी, बहन, बेटी आदि उसके अनेकानेक रूप हैं और सभी रूपों में वह गाती है। **डॉ. वल्लभदास तिवारी** के अनुसार, ''नारी ही त्रैलोक्य की माता है, त्रैलोक्य का प्रत्यक्ष विग्रह, त्रिभुवन का आधार और शक्ति की देह है। उसके समान न सुख है, न गति है, न भाग्य है, न राज्य है, न तीर्थ है, न योग है, न जप है, न मन्त्र है, न धन है। उसके समान न कभी कुछ था, न ही है, न होगा।''[1] साहित्य के निर्माण में पुरुष का हाथ रहा है, यह तो सत्य है किन्तु इस क्षेत्र में नारी के सहयोग की उपेक्षा नही की जा सकती।

भारतीय दर्शन में नारी को प्रकृति रूपा माना गया है। ऋग्वेद में नारी को उच्च स्थान की 'अधिष्ठात्री' बताया गया है। नारी न केवल ईश्वर की अनुपम कृति है बल्कि सृष्टि की तरह अनादि, अनन्त और सनातन है। इसलिए हम नारी को सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिालिका और विकास की 'त्रिवेणी' मानते हैं। नारी पुरुष की अपेक्षा अधिक भावुक, सहनशील तथा संघर्षों का शालीनता पूर्वक सामना करने वाली है। यह कैसे सम्भव था कि वह अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं करती।[2] यह बात सही है कि संघर्षमयी जीवन में नारी की अभिव्यक्ति के साधनों पर पुरुष का नियन्त्रण लगना सम्भव था लेकिन उसकी भावनाओं को बांध पाना उसके वश में नहीं था। गीतों की गुनगुनाहट व लोरियाँ गाकर भी वह भावाभिव्यक्ति कर सकती थी। इसलिए पुरुष की अपेक्षा काव्य पर नारी का अधिक अधिकार है। **मुंशी प्रेमचन्द जी** के शब्दों में, ''पुरुष विकास के क्रम में नारी से पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तक पहुंचेगा, वह स्त्री हो जायेगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण हैं।''[3] साहित्य के विकास में नारी का योग उसके भावात्मक जगत के अस्तित्व की कहानी है, जिसे कभी उसने मौन होकर कहा और कभी व्यक्त शब्दमय रूप में।

भारतीय समाज में साहित्य के निर्माण में पुरुष का विशेष योगदान रहा है, यह सच्चाई है किन्तु साहित्य लेखन के क्षेत्र में हम यह बिल्कुल नही कह सकते कि नारी का सहयोग हमें साहित्य सृजन के क्षेत्र में नहीं मिला। हम सभी मानते हैं कि स्त्री पुरुष की अपेक्षा अधिक संवेदनशील, समर्पित एवं सरल स्वभाव की है। ऐसे में सम्भव ही नहीं होता कि वह अपनी भावनाओं को साहित्य के माध्यम से व्यक्त ही न करे। हिन्दी साहित्य का इतिहास नारी के सृजन से भरा है। नारी संगीतमय भी है व काव्यमय भी है। नारी हृदय में जब–जब सुख–दुख, आशा–निराशा या कोई अन्य संवेदना उत्पन्न हुई तो गीत की गंगा प्रवाहित होती चली गयी। काव्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम **दयाबाई** व **सहजोबाई** उत्तर प्रदेश की संत कवयित्रियाँ थीं।[4] **दयाबाई** व **सहजोबाई** दोनों चचेरी बहनें बताई जाती हैं। चरणदास को इन्होंने अपना गुरु स्वीकार किया है।

सहजोबाई को दिल्ली निवासी हरिप्रसाद वैश्य की पुत्री माना जाता है इनकी रचनाएँ सहज प्रकाष नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं। गुरु महत्त्व इनकी रचनाओं में प्राप्त होता है।[5] **सहजोबाई** के काव्य की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं –

"साहन कूं तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।

कुंजर के पग बेड़ियाँ, चींटी फिरे निसंक।"

भारतीय स्त्री ने पुरुष के साथ मिलकर प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कला, निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण व प्रतिभा का लोहा मनवाया है। राम और कृष्ण की अनेक भावों से उपासना करने वाली कवयित्रियों में **मीराँ, गंगाबाई, रानीसोन कुंवरि, वृषभानु कुंवरि, बीबी रत्न कुंवरि, प्रताप कुंवरि बाई, प्रेम सखी** और **मधुर अली** के नाम चिरस्मरणीय हैं। मीराबाई की उपस्थिति हमारे हिन्दी साहित्य को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण वाङ्मय को चमत्कृत करती है। सभी कृष्ण भक्ति–सम्प्रदायों से परे **मीराँ** का काव्य, सूरदास के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय है।[6] प्रेम–भक्ति की साक्षात् प्रतिमा, काव्य–कानन की कमनीय कल्प–लता, भक्ति–मती **मीराँ** का नाम स्मरण होते ही, सहृदय का हृदय भाव–विभोर हो जाता है, वह भक्ति की गंगा–यमुना में डुबकियाँ लगाने लगता है।[7] हिन्दी साहित्य को सम्पन्न बनाने में **मीराबाई** का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। **मीराँ** के गीत भक्ति और प्रेम के गीत हैं। तुलसी और सूर के सदृश मीराबाई आज साहित्य जगत में अत्यन्त लोकप्रिय है। उनकी रचनाओं की सरसता ने सबके मन को वशीभूत कर डाला है। कृष्ण के विरह में पीड़ा व्यक्त करती हुई **मीराँ** कहती हैं –

"हेरी म्हा तो दरद दिवाणी म्हाराँ दरद न जाण्याँ कोय।

घायल की गत घायल जाण्याँ हिवड़ो अगण संजोय।।"[8]

मीराँ के नयनों व हृदय में कृष्ण का भव्य, स्निग्ध रूप समाया है। यथा –

"बसो मोरे नैननि में नन्दलाल।

सांवरी सूरत मोहिनी मूरत नैना बने बिसाल।"[9]

x x x x

"तुम बिच हम बिच अंतर नाहिं, जैसे सूरजधामा।"[10]

x x x x

"आली री, मेरे नैना बान पड़ी।

चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत उर बिच आन अड़ी।"[11]

भारतीय दर्शन, वेद–पुराण, संस्कृति एवं समाज में नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। हम भरतमुनि की सुप्रसिद्ध पंक्तियाँ कभी नहीं भूलते, जो उन्होंने नारी के सम्मान में कही थीं – **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः।।"** मनुस्मृति की उक्त पंक्तियाँ हमें नारी के प्रति श्रद्धा व सम्मान का बोध कराती हैं। नारी के इस महत्त्व के चलते ही प्राचीन काल में भी नारी शिक्षा का काफी प्रचार था। मैत्रेयी, लोपामुद्रा, विश्वधारा, सिक्ता, घोषा, गार्गी, विदुला, अनुसूया, सावित्री आदि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। हिन्दी साहित्य की प्रमुख कवयित्री **मीराँ** की प्रत्येक पंक्ति में उनका हृदय बोलता है। उनके जैसी कवयित्री हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। उनका प्रचुर साहित्य हिन्दी साहित्य की महान धरोहर है। इसी प्रकार से **कुंवरबाई** और **ताजबाई** भी दोनों कृष्ण भक्त कवयित्रियाँ थीं। वे दोनों मुस्लिम महिला थी। वे दोनों कवयित्रियाँ खड़ी बोली में अपनी काव्य रचना करती थीं। यथा –

"दुष्ट जन मारे, संत जन रखवारे 'ताज'

चित हित बारे प्रेम प्रति करवारा है,

नन्दजू को प्यारा जिन कंस को पछारा।

वह वृन्दावन वारा कृष्ण साहब हमारा है।"12

इतिहास साक्षी है मण्डन मिश्र की पत्नी भारती ने तो विश्वविजयी शंकराचार्य को भी शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया था। इसलिए महानिर्वाण यन्त्र में कहा गया है कि **कन्या नित्यं पासनीया शिक्षणीयातियत्नतः।** अर्थात कन्याओं का लालन–पालन और शिक्षा बहुत ध्यानपूर्वक होनी चाहिए। वैदिक काल में नारियां समाज में पूजित थीं। लेकिन काल–क्रम ने हमारी संस्कृति के इस महत्त्वपूर्ण अंग पर कुठाराघात किया। इसलिए मध्ययुगीन भारत के पतनोन्मुख जीवन में नारी की स्थिति दयनीय थी। बाह्य जीवन में तो उस पर अमानुषिक बन्धन लगे हुए ही थे, उसके अन्तर्जगत को भी अपनी स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल भूमि प्राप्त नहीं थी। परिणामतः उसका अन्तर्मन और बाह्य जीवन दोनों ही नष्ट होते–होते उसे जड़ता की ओर ले जा रहे थे।[13] अतः रीतिकाव्य में तो नारी स्वयं काव्य का आधार बन गयी। कवियों ने उसे वासना का विषय बना दिया। उसके बाद भी **प्रताप कुँवरिबाई, जुगल प्रिया, रत्नकुंवरि बीबी, चन्द्रकला बाई, शेख, प्रवीण, सुन्दर कुंवर बाई** आदि राजघराने की स्त्री कवयित्रियों ने भी हिन्दी काव्य का सृजन किया। इसी प्रकार कवि गिरधर राय की पत्नी **सांई** ने भी अनेकानेक कुण्डलियाँ रची और अपने पति व हिन्दी का सम्मान बढ़ाने में अहं योगदान दिया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि नारी ने हमेशा अपने समर्पण, त्याग, प्रतिभा व मेहनत के बल पर अपनी कार्यप्रणाली की छटा बिखेरी है। प्राचीन काल से ही उसने अपनी भावनाओं को अनेक बार गीत, काव्य आदि के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इतिहास साक्षी है कि महिला रचनाकारों ने प्रत्येक युग में अपने साहित्य के क्षेत्र में पहचान बनाए रखी है। आधुनिक काव्य में आते–आते महिला रचनाकारों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी होने लगी। इस युग में नारी कल्याण के आन्दोलन होने लगे। आर्य–समाज, ब्रह्म–समाज, आदि इस उत्थान कार्य के साधन–रूप में अस्तित्व में आए। नारी ने जीवन का एक नया रूप देखा। उसके विचार उद्दीप्त होने लगे, भावनाएँ अभिव्यक्ति के लिए मचलने लगी। जिस कारण से पद्य और गद्य में महिला रचनाकारों की संख्या बढ़ती चली गई। आधुनिक काव्य के शुभारम्भ में **सरस्वती देवी, तारा पांडे, रामेश्वरी देवी 'चकोरी', विद्यावती 'कोकिल', होमवती देवी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, तोरन देवी शुक्ल 'लली', श्रीमती राजरानी, गोपाल देवी** आदि महिला कवयित्रियों के नाम उल्लेखनीय हैं।[14] इन सभी महिला कवयित्रियों ने प्रचुर काव्य सृजन किया। इन सब की काव्य रचनाओं में देश प्रेम मूल स्वर था। **तोरणदेवी 'लली'** का नाम विशेष उल्लेखनीय रहा है। वे गायिका व सृजिका दोनों में मुख्य स्थान पाती हैं। **'लली जी'** उन जवानों के प्रति अपनी श्रद्धा के फूल अर्पित करती हैं, जिन्होंने देश के लिए बलिदान कर दिया था। यथा –

"माता के लाल लड़ते थे, बहिनों के वीर बांकुरे थे,

सौभाग्यवती के जीवन के जीवन, प्राणों के प्यारे थे,

वे सबकी भावी आशा थे, थे जन्म भूमि के होनहार।

सादर सस्नेह प्रणाम आज, उन चरणों पर शत कोटिवार।"[15]

मुंशी प्रेमचंद जी के शब्दों में, "**पुरुष विकास के क्रम में नारी से पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तक पहुँचेगा, वह स्त्री हो जाएगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण हैं।**" ऐसी ही ममता की मूर्ति महान कवयित्री का नाम महादेवी वर्मा है। या यूँ कहें कि आधुनिक युग की मीराँ, **महादेवी वर्मा** को कौन नहीं जानता। इनकी कविताओं में दर्द व पीड़ाओं की

अभिव्यक्ति के कारण उन्हें **'आधुनिक मीराँ'** भी कहा जाता है। इनके काव्य में संवेदना, भाव, संगीत एवं चित्र का अद्भुत संगम मिलता है। **डॉ. नगेन्द्र** के शब्दों में, ''वह एक कुशल चित्रकार भी थीं। इसलिए उनकी कविताओं में चित्रों जैसी संरचना का आभास प्रायः मिल जाता है।''[16] उनके साहित्य में पीड़ा, आँसू, माधुर्य, आनन्द तथा उल्लास सभी कुछ है। इनकी कविताओं में पीड़ा के तत्त्व की प्रधानता को देखकर कुछ आलोचकों ने इन्हें पीड़ावाद की कवयित्री भी कहा है।[17] संसार की असारता, जीवन की क्षणभंगुरता और प्राणियों की करुणावस्था के कारण **महादेवी** की वेदना व करुणा का उदाहरण इस प्रकार है –

''मेरे हंसते अधर नहीं, जग की आँसू लड़ियाँ देखो।

मेरे गीले अधर छुओ मत, मुरझाई कलियाँ देखो।''[18]

जीवन जगत की क्षण भंगुरता को उन्होंने शाश्वत सत्य के रूप में व्यक्त किया है –

''सूखे यह माया का संसार, क्षणिक है तेरा मेरा संग,

यहाँ रहता काँटों में बंधु, सुमन का यह चटकिला रंग।''[19]

आधुनिक नारी 'देवी' के सिंहासन से उतर कर 'स्त्री' के रूप में पहचान बनाने के लिए संघर्षरत है। माँ, बेटी, बहन, पत्नी, प्रेमिका और बहू के रूप में स्वयं को सिद्ध करने की बजाय आज की स्त्री अपने को स्त्री के रूप में सिद्ध करना चाहती है। इसी प्रकार **सुभद्रा कुमारी चौहान** सच्ची देश–प्रेमिका थीं। वह जीवन भर मानवता की पुजारिन बनी रही। नर्मदा प्रसाद खरे के शब्दों में, ''सुभद्रा जी कवयित्री थी, कहानी लेखिका थी, देश सेविका थीं और समाज सेविका भी, किन्तु वे उससे पहले मानवी थीं, पूर्णरूपेण मानवी। मानव मात्र के लिए उनके हृदय में अपार करुणा, सहानुभूति और ममता थी।''[20] उनमें अलौकिक साहित्यिक प्रतिभा थी। उनकी **'राखी'** व **'झांसी वाली रानी'** कविताएँ लोक–व्यापक थीं। इन कविताओं ने तो देश में धूम–सी मचा दी थी, जिन्हें आज भी लोग गा–गाकर थिरक उठते हैं। लक्ष्मीबाई की वीरता व बलिदान को कवयित्री ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

''जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,

यह तेरा बलिदान जगावेगा, स्वतन्त्रता अविनाशी।।''[21]

आधुनिक नारी स्वतंत्र है। सत्ता की दाव–पेंच हो या खेल का मैदान, वैज्ञानिक अनुसंधानों की प्रयोगशाला हो या कला साहित्य का संसार, अन्तरिक्ष की ऊँचाइयाँ हों या सिन्धु की गहराइयाँ, आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी ने अपने चरण चिह्न अंकित किए हैं। अनेक महिला रचनाकारों ने देश प्रेम के लिए अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं। प्रसिद्ध कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** की कविताओं में अधिकतर राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। **'झांसी की रानी'** शीर्षक कविता अत्यन्त लोकप्रिय हुई और **सुभद्रा जी** का नाम जन–जन तक इसी कविता से पहुंचा।''[22] इसी प्रकार **दिनेश नन्दिनी, डालमिया, सूर्यदेवी दीक्षित** आदि महिला कवयित्रियों और गद्य लेखिकाओं की भीड़ लग गयी। लोकगीत, कविता, प्रबन्ध काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, लघु–कथाएँ, एकांकी आदि गद्य और पद्य की विधाओं में प्रचुर काव्य सृजन किया है। यथा कुछ प्रमुख नाम उल्लेखनीय हैं – **निधिरानी, रघुराज कुंवरि, ज्वालादेवी, कमल कुंवर, पुरुषार्थवती, हीरादेवी चतुर्वेदी, शकुन्तला सिरोठिया, शकुन्तला माथुर, शान्ति मेहरोत्रा, रमासिंह, कीर्ति चौधरी, राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला), उषादेवी मिश्रा, सत्यवती मल्लिक, कमला चौधरी, चन्द्रवती ऋषभसेन जैन, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, शिवरानी देवी प्रेमचन्द, यशोदा देवी, तेजरानी पाठक, रजनी पनिकर, मन्नू भंडारी**[23] आदि उल्लेखनीय नाम पद्य और गद्य में महिला रचनाकारों के बड़े सम्मान के साथ गिनाये जा सकते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि इसी प्रकार पद्य व गद्य के क्षेत्र में कुछ और उल्लेखनीय नाम भी हमारे सामने आते हैं, जिनके साहित्य पर हम गर्व करते हैं – **उषा प्रियंवदा, अन्विता अग्रवाल, मणिका मोहिनी,**

श्रीमती विजय चौहान, ममता अग्रवाल, सुधा अरोड़ा, ममता कालिया, सुनीता जैन, पुष्पलता कश्यप, दीप्ति खण्डेलवाल, शशिप्रभा शास्त्री, निरूपमा सेवती, सोमावीरा, मृदुला गर्ग, डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ. प्रेमवती उपाध्याय, प्रेमवती सक्सेना, डॉ. करुणा पाण्डेय, डॉ. मुक्ता, डॉ. मीरा गौतम, डॉ. सरिता वाशिष्ठ, डॉ. अंजना संधीर, डॉ. ज्ञानी देवी, कृष्णा सोबती, डॉ. मधु चतुर्वेदी, सरिता शर्मा, डॉ. रमा सिंह, डॉ. माया सिंह, डॉ. राजकुमारी, डॉ. विद्या चौधरी, डॉ. बीना बुदकी, डॉ. विद्याबिन्दू सिंह, डॉ. मीना कौल, डॉ. मीना अग्रवाल, डॉ. किरण सेठ, प्रज्ञा मिश्रा, प्रोमिला भारद्वाज, सूर्यबाला, नमिता सिंह, डॉ. सावित्री वाशिष्ठ, राजी सेठ, मंजुल भगत, कृष्णा–अग्निहोत्री, चन्द्र किरण, सौनरिक्सा, मृणाल पाण्डेय, मालती जोशी, रश्मि मल्होत्रा, डॉ. इन्दु प्रकाश, उषा महाजन, चन्द्रकांता, अजीत कौर, कुसुम अंचल, मैत्रीय पुष्पा, शान्ति जोशी, सुधा गोयल, डॉ. शीला रजवार, डॉ. मोहिनी शर्मा, डॉ. रेखा कुलकर्णी, डॉ. रोहिणी अग्रवाल, मंजु शर्मा, मंजुलता तिवारी, बिन्दु अग्रवाल, डॉ. प्रमिला कपूर, पुष्पावती खेतान, डॉ. नीलम गोयल, डॉ. तेजिन्द्रपाल कौर, डॉ. किरण बाला अरोड़ा, डॉ. आशारानी व्होरा, इन्दुरानी आदि–आदि के रूप में आज असंख्य महिला रचनाकार हिन्दी सृजन कार्य में रत हैं, जिनका योगदान समय के साथ–साथ इतिहास की शिला पर अंकित होगा। अतः मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि ज्यों–ज्यों नारी शिक्षा का प्रसार बढ़ता जाएगा, त्यों–त्यों साहित्य की विविध विधाओं में महिलाओं का सृजनात्मक योगदान भी बढ़ता जायेगा। हमेशा से भारतीय समाज में नारी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला की प्रेरक शक्ति और प्रेम व ममता का अक्षय भण्डर मानी गई हैं। आज भारतीय नारी न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में अपनी प्रतिभा से प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हो रही है।

संदर्भ.

1. डॉ. वल्लभदास तिवारी, हिन्दी काव्य में नारी, पृ. 42
2. उमेश माथुर, आधुनिक युग की हिन्दी–लेखिकाएँ, पृ. 8–9
3. अमृतराय, कलम का सिपाही, पृ. 124
4. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ. 104
5. डॉ. बहादुर सिंह, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 304
6. डॉ. लालचन्द गुप्त 'मंगल' हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 104
7. डॉ. लीलाधर वियोगी, काव्य कोकिला मीरॉंबाई, पृ. 01
8. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ. 144
9. डॉ. लीलाधर वियोगी, काव्य कोकिला मीराबाई, पृ. 55
10. वही, पृ. 77
11. वही, पृ. 49
12. डॉ. रामप्रसाद मिश्रा, हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृ.
13. उमेश माथुर, आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ, पृ. 07
14. वही, पृ. 14
15. वही, पृ. 90
16. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 538
17. डॉ. शिव कुमार, हिन्दी साहित्य का युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. 510
18. गोपीनाथ व्यथित, महादेवी : व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 60
19. वही, पृ. 62–63
20. द्रष्टव्य, 'बुन्देले हरबोलों के मुँह जिसने सुनी कहानी, पृ. 63
21. उमेश माथुर, आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ, पृ. 99
22. विजयेन्द्र स्नातक, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 268
23. उमेश माथुर, आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ, पृ. 24–25